

पाठ - 16

आराधना

1 राजा 18:20-46

राजा सुलैमान ने मन्दिर के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दिया, परन्तु उसका अंत बहुत बुरा हुआ। आगे के वर्षों में, उसके बाद के अधिकांश राजा यहोवा से दूर हो गए। सबसे बुरे में से एक राजा अहाब था जिसने मूर्तियों की पूजा को बढ़ावा दिया। परन्तु परमेश्वर ने एलिय्याह भविष्यद्वक्ता को अपने लोगों को अपने पास वापस बुलाने के लिए खड़ा किया।

जीत और आपदा के बीच अक्सर बहुत कम दूरी होती है। जब सुलैमान सिंहासन पर आया, तो परमेश्वर के लोगों के पास उनके लिए सब कुछ था: बुद्धिमान नेतृत्व, मजबूत एकता और उनके देश में शांति। मंदिर के समर्पण के समय उनके बीच परमेश्वर की उपस्थिति आ गई थी। परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया सुलैमान की सफलता ने शालीनता को जन्म दिया, और उसके शासनकाल के बाद के वर्षों में भविष्य की आपदा के बीज बोए गए।

आपदा के लिए एक नुस्खा

सुलैमान ने तीन गलतियाँ की। सबसे पहले, उसने पीड़ित लोगों के साथ संपर्क खो दिया। राजा का ध्यान यरूशलेम पर केंद्रित होने की वजह से, दक्षिण में लोग समृद्ध हुए, जबकि उत्तर में उनके भाई बंधु मजदूरी के कार्यक्रम के तहत संघर्ष कर रहे थे जिससे वे बहुत ही ज़्यादा बेबस और असहाय महसूस कर रहे थे।

शायद सुलैमान ने सोचा होगा कि उत्तर में लोग कम महत्वपूर्ण थे, परन्तु उसके अदूरदर्शी नेतृत्व के दीर्घकालिक नतीजे थे। और जब उसने देश को अपने पुत्र रहबियाम के हातों में दिया, तब तक फूट के बीज बोए जा चुके थे।

दूसरा, सुलैमान आत्म-भोग में डूब गया। उसके पास लगभग असीमित शक्ति और महान संसाधन थे, और इसलिए वह वस्तुतः कुछ भी कर सकता था जो वह चाहता था। अपने शुरुआती दिनों में, उसने अपना समय,

शक्ति और पैसा परमेश्वर की महिमा के लिए कुछ पूरा करने में लगाया। परन्तु बाद में उसने अपने जीवन को आत्म-भोग में लिप्त करने के लिए अपने पद का इस्तेमाल किया।

सुलैमान की 700 पत्नियाँ और 300 रखेलियाँ हो गई थीं (1 राजाओं 11:3), और यह भोग-विलास ही उसके विनाश का कारण था: "जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराये देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद के समान अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा" (11:4)।

तीसरा, सुलैमान ने वह करने का चुनाव किया जो सही के बजाय लोकप्रिय था। इतनी सारी विदेशी पत्नियों से विवाह करने के बाद, वह उन देवताओं के लिए वेदियाँ बनाने के दबाव के आगे झुक गया जिनकी वे पूजा करती थी: "उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के सामने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नामक घृणित देवता के लिये और अम्मोनियों के मोलेक नामक घृणित देवता के लिये एक एक ऊँचा स्थान बनाया। और अपनी सब विजातीय स्त्रियों के लिये भी, जो अपने अपने देवताओं को धूप जलातीं और बलिदान करती थीं, उसने ऐसा ही किया" (11:7-8)।

यह परमेश्वर के लोगों के बीच घोर मूर्तिपूजा की शुरुआत थी। सुलैमान के शासन के आरम्भ में, यरूशलेम वह स्थान था जहाँ जीवित परमेश्वर ने अपना नाम रखा था। परन्तु अंत तक आते-आते, यरूशलेम अन्य देवताओं के मंदिरों से भर गया। यरूशलेम का कोई भी आगंतुक यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि इस्राएल का परमेश्वर बहुतों में से एक है।

सुलैमान ने अपने जीवन के पहले भाग में परमेश्वर के लिए महान कार्य किए, और फिर बाद के वर्षों को आत्म-भोग के कारण उसने अपने बहुत से अच्छे किए गए कामों को उलट दिया। उसने अपने पिता दाऊद से राज्य प्राप्त किया, जो संयुक्त और शांति में था, परन्तु उसने अपने बेटे को एक ऐसा राज्य सौंप दिया जो जल्द ही विभाजित हो जाएगा और युद्ध में होगा।

जब रहूबियाम ने सत्ता संभाली, तो उसे उत्तर दिशा के लोगों के बीच असंतोष का सामना करना पड़ा। उन्हें यारोबाम में एक प्रधान मिला, और वे उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए, और उसे अपने राजा के रूप में ताज पहनाया। इस प्रकार उत्तर में दस गोत्र दाऊद के वंश से अलग हो गए जिसे परमेश्वर ने आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा की थी।

उत्तर दिशा की कहानी

यारोबाम दस उत्तरी गोत्रों का एक धूर्त नेता था, और उसने धर्म की एकजुट शक्ति को समझ लिया था। उसने देखा कि अगर उत्तर के वफादार लोग मंदिर में आराधना करने के लिए यरूशलेम जाते रहेंगे, तो उन्हें उस एकता की याद आएगी जो उन्होंने दक्षिण में अपने भाइयों और बहनों के साथ साझा की थी।

इसलिए यारोबाम ने अपनी पूजा के केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया। उसने सोने के दो बछड़े बनवाए और लोगों से कहा, “यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है इसलिये हे इस्राएल अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाए हैं” (1 राजाओं 12:28)। ये वही शब्द थे जिनका उपयोग हारून ने जंगल में सोने का बछड़ा बनाते समय किया था (निर्गमन 32:8)।

इससे और भी ज्यादा बुरा आगे होने वाला था। यारोबाम ने राज्य अपने पुत्र नादाब को सौंप दिया, और नादाब अपने पिता के मार्गों पर तब तक चलता रहा, जब तक कि बाशा ने उसे मार न डाला। उसके बाद एला आया, जो शराबी और हत्यारा था। फिर जिम्री था, जो राजद्रोह का दोषी था और केवल सात दिनों तक टिक सका, और फिर ओम्री, जिसने “उन सभी से भी जो उससे पहले थे अधिक बुराई की” (1 राजाओं 16:25)। अंत में अहाब था, जो ओम्री से आगे निकल गया और उसने “उन सबसे अधिक जो उससे पहले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे” (16:30)। अहाब ने कुख्यात ईज़ेबेल से विवाह किया जिसने महल की शक्ति का उपयोग उत्पीड़न के अभियान को शुरू करने के लिए किया जिसमें परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं का शिकार किया गया और मार डाला गया।

सुलैमान की मृत्यु के बाद के वर्षों में, इस्राएल पहचान से परे बदल गया था। सुलैमान के शासन के आरम्भ में, राजा ने कहा, “परमेश्वर एक ही है।” यारोबाम के समय तक, आधिकारिक स्थिति यह थी कि “कई देवता हैं।” और अहाब के समय तक, यह कहना अस्वीकार्य था कि एक ही परमेश्वर है, और जिन्होंने ऐसा किया वे हिंसक उत्पीड़न के शिकार हुए। इसलिए परमेश्वर ने एलिय्याह नबी को अपने लोगों के बीच सच्ची उपासना बहाल करने के लिए भेजा।

सच्ची आराधना सत्य प्रकट करने की प्रतिक्रिया है

कार्मेल पर्वत का दृश्य एक बड़े मुकाबले का था। अहाब ने बाल के 450 नबियों और अशेरा के 400 नबियों को देश भर के लोगों के साथ भेजा (1 राजाओं 18:19)। जब सब लोग इकट्ठे हो गए, तो एलिय्याह ने लोगों को एक प्रश्न के साथ चुनौती दी: “तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे

हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो” (18:21)। एलिय्याह ने परंपरा पर चुनौती नहीं की; उसने सच्चाई पर चुनौती की। परमेश्वर की आराधना करने का एकमात्र कारण यह है कि वह परमेश्वर है।

किसी को यह कहने का अधिकार नहीं है कि आपको ईसाई होना चाहिए क्योंकि आपके माता-पिता ईसाई थे, या क्योंकि ईसाई धर्म आपकी संस्कृति में प्रमुख धर्म है। ईसाई धर्म इस दावे पर खड़ा होता या गिरता है कि यह सत्य है कि: “यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करो।”

एलिय्याह के प्रश्न ने सत्य और त्रुटि की श्रेणियों को मान लिया, और लोगों को इन शर्तों पर विचार करना बहुत कठिन लगा। उन्हें इस विचार के साथ पाला गया था कि आप जिस भगवान की पूजा करते हैं वह केवल एक व्यक्तिगत पसंद है, विश्वास एक निजी मामला है, और प्रत्येक व्यक्ति को पूजा करने का एक तरीका खोजना चाहिए जो उनके अपने व्यक्तित्व के अनुकूल हो।

परन्तु इससे पहले कि आप आराधना कर सकें, आपको यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर कौन है। सच्ची आराधना सत्य प्रकट करने की प्रतिक्रिया है। सार्वजनिक आराधना को सत्य की बुनियाद पर बनाना चाहिए। हमें सत्य गाना चाहिए, सत्य पढ़ना चाहिए, सत्य प्रार्थना करनी चाहिए और सत्य का प्रचार करना चाहिए।

सच्ची आराधना जीवित परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करती है

एलिय्याह चाहता था कि लोग जानें कि केवल एक ही जीवित परमेश्वर है, इसलिए उसने बाल के नबियों को एक बलिदान तैयार करने के लिए आमंत्रित किया और फिर बाल को आग भेजकर उत्तर देने के लिए बुलाया। बाल के भविष्यवक्ताओं ने खुद को चुनौती दी, और उन्होंने अपने देवता को पुकारा: “हे बाल, हमारी सुन!” (18:26)। वे वेदी के चारों ओर नाचते थे और आवेश में आ जाते थे।

जो इतने उज्ज्वल, रंगीन और जीवंत से शुरू हुआ था वह जल्द ही अंधकार से भर गया, और एक अधिक बुराई से भरा तत्व दिखाई देने लगा। बाल के भविष्यवक्ताओं ने “स्वयं को काटना शुरू कर दिया” (18:28), इससे पहले कि वे हार मानने के लिए तैयार हों, उन्होंने स्वयं को आत्म-प्रताड़ित पीड़ा से भर दिया।

परन्तु इस सारी गहन गतिविधि के बाद, “किसी ने उत्तर नहीं दिया; किसी ने ध्यान नहीं दिया” (18:29)। बाल की पूजा आत्म-अभिव्यक्ति के अभ्यास से अधिक कुछ नहीं थी। भविष्यवक्ता आपस में बातें कर रहे थे, क्योंकि और कोई नहीं सुन रहा था।

बाल की पूजा विकसित हुई क्योंकि इतिहास के किसी समय पर लोगों ने बाल नामक देवता के बारे में पौराणिक कहानियाँ बनाई और उन्हें लिखा। फिर अन्य लोगों ने बाल की मूर्तियाँ बनाई और उन्हें लकड़ी पर तराशा। परन्तु बाल की उपासना में मनुष्य के मन ने जो स्वप्न देखा था और जो मनुष्य के हाथों ने बनाया था, उससे बढ़कर कुछ भी नहीं था। यह पूरी चीज एक सांस्कृतिक रचना थी और इस कारण से इसमें कोई शक्ति नहीं थी।

आज बहुत से लोग इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि ईसाई धर्म ठीक उसी तरह विकसित हुआ जैसे बाल की पूजा होती है। वे मानते हैं कि बाइबिल भी प्राचीन काल्पनिक कथाओं की एक पुस्तक है, और चूंकि वे मानते हैं कि यह मानव संस्कृति का निर्माण है, वे इस बात पर जोर देते हैं कि इसमें कोई शक्ति नहीं है। यदि वे अपनी धारणा में सही होते, तो वे अपने निष्कर्ष में सही होते। एक संस्कृति द्वारा निर्मित धर्म को दूसरी संस्कृति पर नहीं थोपा जाना चाहिए। एक धर्म जो केवल एक पीढ़ी की पसंद था उसे दूसरी पीढ़ी पर नहीं थोपा जाना चाहिए। यदि सभी धर्म मानव निर्मित हैं, तो उनमें से कोई भी सत्य होने का दावा नहीं कर सकता।

सच्ची आराधना एक स्वीकार्य बलिदान पर ध्यान केंद्रित करती है

परन्तु एलिय्याह जानता था कि जीवित परमेश्वर कोई सांस्कृतिक रचना नहीं थे। वह जीवित परमेश्वर के ज्ञान को देश में बहाल करने के लिए तरस रहा था, इसलिए उसने एक वेदी बनाई और बलिदान को भिगोने के लिए उस पर पानी डाला।

तब एलिय्याह ने प्रार्थना की: “हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! आज यह प्रगट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है.... हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन कि लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है। ”
(1 राजाओं 18:36-37)।

“तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सुखा दिया” (18:38)। उस आग की तीव्रता की कल्पना कीजिए जिसने न केवल लकड़ी बल्कि पत्थरों और धूल को भी जला दिया! यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, “यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है” (18:39)।

कल्पना करने की कोशिश करें कि आप किसी भीड़ में हैं। आपने अपनी संस्कृति के प्रचलित विश्वास को स्वीकार कर लिया है कि एक धर्म अनिवार्य रूप से दूसरे के समान है। परन्तु जैसे ही आप एलिय्याह को

प्रार्थना करते हुए देखते हैं, आकाश आग से भर जाता है। अचानक आपको यह स्पष्ट हो जाता है, एलिय्याह सच बोल रहा है। यहोवा ही परमेश्वर है, और अब उसके न्याय की आग गिरने वाली है!

इस अद्भुत सत्य के बारे में सोचें: परमेश्वर की आग बलिदान पर गिरी, लोगों पर नहीं। यह हमें उस क्रूस की ओर संकेत करता है जहाँ परमेश्वर का न्याय उन सैनिकों पर नहीं डाला गया था जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, या उस भीड़ पर नहीं जिन्होंने उनका मजाक उड़ाया था, परन्तु स्वयं यीशु पर, जो हमारे लिए बलिदान बन गए। यीशु ने उस न्याय को आत्मसात कर लिया जो पापियों पर गिरना था। यह उन पर इसलिए गिरा कि वह हम पर न गिरे। परमेश्वर ने न्याय को हमारे ऊपर से फेर कर यीशु पर डाल दिया, और इस तरह, उन्होंने हमें अपने साथ मिला लिया।

सच्ची आराधना हमेशा सत्य प्रकट करने की प्रतिक्रिया है। यह जीवित परमेश्वर की ओर निर्देशित है, प्रभु यीशु मसीह के इर्द-गिर्द केंद्रित है, और पवित्र आत्मा से प्रेरित है। सच्ची आराधना को वहीं बढ़ावा मिलेगा जहाँ परमेश्वर की सच्चाई का प्रचार किया जाता है, जहाँ यीशु मसीह को ऊँचा उठाया जाता है, और जहाँ परमेश्वर के लोग अपने जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति समर्पण करते हैं।

यदि आप अपनी आराधना में बढ़ना चाहते हैं, तो अपनी बाइबल खोलें और अपने मन को उसमें डुबोएं जो परमेश्वर अपने बारे में कहते हैं। पवित्र आत्मा आपके हृदय में आराधना को प्रेरित करने के लिए सत्य का उपयोग करेगा।

प्रश्न:

परमेश्वर के वचन के साथ और जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिंब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. आप ऐसे बीज बोने के सबसे बड़े खतरे में कहाँ हैं जो भविष्य में आपदा की ओर ले जाएगा? क्या आप लोगों को चोट पहुँचाने के साथ संपर्क खो रहे हैं? क्या आप आत्मग्लानि में फिसल रहे हैं? क्या आप सही चीज़ के बजाय लोकप्रिय चीज़ पसंद कर रहे हैं?

2. यदि आप अपना मार्ग नहीं बदलते हैं, तो आपने क्या कुछ अच्छा किया है/पूरा करने की आशा करते हैं जिसे आप अपने बाद के वर्षों में उल्टा देखना पसंद नहीं करेंगे?

3. ईसाई धर्म किस पर टिकती या गिरती है?

4. क्या आप कहेंगे कि ईसाई धर्म उसी तरह विकसित हुआ जैसे बाल की पूजा होती है? क्यों या क्यों नहीं?

5. जब परमेश्वर की आग एलिय्याह के तैयार बलिदान पर गिरी (लोगों पर नहीं), तो यह हमें कैसे समझने में मदद करता है कि यीशु के क्रूस पर क्या हो रहा था?